P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-5 * (Part-1) January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कला और संस्कृति के माध्यम से आर्थिक जीवन भाक्ति को बढ़ाना

रि□म बाजपेई
शोध छात्रा,
ड्राइंग एण्ड पेंन्टिंग विभाग,
दयानन्द गर्ल्स डिग्री कॉलेज,
कानपुर, भारत

सारांश

कला एवं संस्कृति मानव जीवन के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। कला प्राचीन इतिहास, संस्कृति गौरव एवं समाज की प्रगति को दर्शाती है तथा सदैव ही मनुष्य को आकृष्ट करता है और यह सत्य भी है कि कला के द्वारा मानव अपने आर्थिक जीवन को भी प्रगतिशील रखता है। नित नये प्रयोग कला में विविधता लाते है, यही विविधता मानव को सदैव आकर्षित करती है।

कलाकार भी सामाजिक प्राणी होता है समाज में रहने के लिये एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। कलाकार का भरण–पोषण/सृजन से मन ही संतुष्ट होता है उदर नहीं। आज के इस व्यवसायिक युग में धन बहुत ही आश्यक है। कलाकार के पास धनोपार्जन का एक ही साधन है–'कलाकृति'।

मुख्य शब्द : आर्थिक जीवन, शक्ति।

प्रस्तावना

कला अनुभव की सूक्ष्मता, प्रवीणता और अंतः प्रेरणा पर आधारित कल्पना, रूप और रचनात्मक अभिव्यक्ति द्वारा मानव कौशल या शिल्प को व्यक्तकरती है। कलात्मक कार्य हेतु कलाकार में ऐसी योग्यता होनी चाहिये कि जो कुछ उसे दिखाई देता है या उसके मानस पटल पर अंकित हो वह पत्थर कागज कैनवास पर या किसी भी रूप में ज्यों का त्यों उतार सके।

आज के कलाकार उभरते सम्पूर्ण औद्योगीकृत विश्व की नवीन शाखा है। जो आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक स्थितियों में पुराने होते जा रहे कला, वास्तुकला, साहित्य धार्मिक विश्वास, सामाजिक संगठन और दैनिक जीवन के पारंपरिक रूपों को महसूस करते हैं। ''शिक्षा की भाति ही कला का प्रभाव मानव मन पर पड़ता है। उसमें भावनायें, सम्वेदनायें उभारने, प्रवृत्तियों को ढालने तथा चिंतन को मोड़ने एवं अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता भरी पड़ी है। संगीत गायन, अभिनय, चित्र, साहित्य आदि के माध्यम से कला विकसित होती है। इसमें मनोरंजन सौदर्य प्रवाह, उल्लास न जाने क्या तत्व भरे पड़े हैं जो मानव मन को सम्मोहित कर बदलने–पलटने म अत्यधिक समर्थ सिद्ध होते है। कला अमृत भी है और विष भी। वह अपने जमाने के व्यक्ति और समाज को पतन के गर्त में डूबी भी समती और उत्थान के शिखर पर उठा भी सकती है। शिक्षा से भी अधिक सामर्थ्य कला में है शिक्षाका प्रभाव तो वर्षों में दिखता है पर कला अपना प्रभाव तत्काल दिखती है।''[1]

कला से मनुष्य के अन्तर्चक्षु खुल जाते हैं जो उसे समस्त तत्वों के मूल को समझने में समर्थ बनाता है। मनुष्य को यथार्थ कार्यों में प्रवृत्त करता है। कला–विद्या जीवन के वास्तविक महत्व को रचनात्मकता द्वारा समझने योग्य बनाती है।

वर्तमान समय में औद्योगिक क्रांति के उदय के साथ कला ने नई दिशा में प्रवेश किया। कला के पुनरूज्जीवन व्यापार और उद्योग, कम्प्यूटर फिल्म टेलीविजन चैनल के विकास और राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय उत्पादों के प्रति आम उमंग ने सारी ललित कलाओं ने व्यवसायिक बना दिया है। अब ऐसे अनेक व्यवसाय है जिन्हें पूर्णकालिक जीविका के रूप में अपनाया जा सकता है। आज का युवा वर्ग कला के अनेक रूप को जीविका के साधन के रूप में अपना रहे हैं।

वाणिज्यिक कलाकार जो वाणिज्यिक उत्पादनों और सेवाओं की उन्नति तथा उसमें रूचि उत्पन्न करने के लिये कला प्रयोग करते है। मंच कलाकार संगीत, नृत्य, अभिनय (मंच, रेडियो, टेलीविजन और चलचित्र) के प्रतिपादक है। ''कलाकार विभिन्न कला क्षेत्रों में अपनी जीविका को चलाने हेतु जो रोजगार अपना रहे है वो है–कला अध्यापक, चित्रकार, मूर्तिकार, थियेटर निर्देशक, संगीतकार, गायक, वाद्य संगीतकार, ताल वाद्य, नर्तक सम्बन्धित कर्मचारी,

सामान्य फोटोग्राफर ड्रेसर, फिनशिंग कलाकार आदि।''[2] जो जिस विद्या में रूचि रखता है तथा जिस कला में पारंगत है उसी क्षेत्र विशेष में अपना रोजगार तलाशता है। वर्तमान में चित्रकार, मूर्तिकार, फिल्मकार ललित कलाओं के प्रतिपादक है और जो यांत्रिक साधनों के उपयोग से अपनी कृतियों की रचना करते हैं। उन्हें डिजिटल यूजर्स भी कहते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

कला के अधिकांश व्यवसायों में बहुत समय तक गहन प्रशिक्षण और अभ्यास की जरूरत होती है। महत्वाकांक्षी व्यक्ति के पास न केवल पर्याप्त प्रतिभा ही होनी चाहिये वरन् इस चयन किये हुए क्षेत्र में उसे अधिक कठोर परिश्रम करने का उसमें दृढ़ निश्चय भी होना चाहिये। किसी भी कलाकार को पहले अपने में कलात्मक योग्यता और प्रतिभा का पता लगाना चाहिये और उसके बाद उसका विकास करना चाहिये। आजीविका का प्रशिक्षण स्कूल से ही शुरू कर दिया जाना चाहिए। यह स्वाभाविक भी है कि जिस व्यक्ति में किसी कला के लिये कोई प्रतिभा हो उसका आभास आरम्भ में ही हो जाता है।

इन तथ्यों के अलावा कला के माध्यम से जीविकोपार्जन करने के लिये बहुत सारी व्यक्तिगत योग्यताओं के साथ शारीरिक और स्वभावगत योग्यता भी आपेक्षित होती है। अलग–अलग व्यवसाय के लिये अलग–अलग व्यक्तिगत आवश्यकतायें होती है इसलिए व्यवसायिक ज्ञान अति आवश्यक है। ''यह एक खुली सच्चाई है कि इस समय आर्थिक युग का दौर है। बाजार की ताकतें मानव जीवन के प्रत्येक पहलू को नियंत्रित–परिवर्तित करती है। ये कार्यवाइयाँ मानव जीवन की उन्नति के लिये नहीं है बल्कि अपने मुनाफे को बढ़ाने के लिये करती है।''[3]

ललित कला को जीविका के क्षेत्र में अपनाने के लिये एक कलाकार में निम्नलिखित रूझान और व्यक्तिगत गुणों का होना अत्यंत महत्वपूर्ण है–

सृजनाक्ति

उसके चारों ओर व्याप्त वस्तुओं के उपयोग से अपनी कल्पनाशक्ति के माध्यम से किसी वस्तु में नवीनता प्रदान करने की योग्यता।

कलात्मक योग्यता

देखी हुई वस्तुओं को मूर्त तथा सुन्दर आकार देने की योग्यता।

आकार–बोध

चीजों और उनके ब्योरे का बोध कर सकने की योग्यता दृष्टिक तुलना करने की योग्यता।

आयाम सम्बन्धी योग्यता

दो या तीन आयामों ओर ज्यामितीय शक्लों में चीजों को सजीव कल्पना करने की दक्षता।

रंग विभेद भाक्ति

एक उत्कृष्ट कलाकार में रंग विभाजन का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिये।

आधी दृश्टिक याददात

आकृतियों, शक्लों, लम्बाई चौड़ाइयों और रंगों के प्रभाव को याद रखन की शक्ति।

विचारों को रेखाओं स व्यक्त करने की योग्यता

दृश्य तालिकाओं, रेखाचित्रों, नक्शों, तस्वीरों आँकड़े आदि के माध्यम से भावों को व्यक्ति करने की योग्यता।

उपयुक्त बिन्दुओं का सार यही है कि यदि एक कलाकार कला को अपनी जीविका का माध्यम चुनता है तो वह इन सभी योग्यताओं से परिपूर्ण हो उसमें सृजनात्मकता में विधिवत लाने का गुण हो तथा वह अपनी समसामयिक कला रचना से अवगत हो कि समाज में किस प्रकार की कला के दौर की लाकप्रियता है। भारत में आधुनिक कला बाजार बहुत देर से विकसित हुआ। यही वजह है भारतीय कला को भारत व विदेशों में मान्यता मिलने में देर लगी। आरम्भ में भारत के कलाकारों को अन्य देशों के कलाकारों की अपेक्षा कम पैसे मिलते थे। परन्तु ''1986 में क्रिस्ट्रीज और 1988 में सादबीज ने भारत में कलाकृतियों की नीलामियों में बदलाव किया। भारतीय कला बाजार बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एम0एफ0 हुसैन ने। भरतीय कला जगत में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने विश्व, कला बाजार को प्रभावित किया और आमंत्रित भी। इससे भारतीय कला की एक नई पहचान मिली।''[4]

पहले कभी देश की आर्थिक राजधानी बम्बई में ही कुछ आर्ट गैलरी हुआ करती थी तथा पूरे देश के कलाकार वहाँ प्रदर्शनी लगाने को उत्सुक रहते थे। परन्तु अनेक दूसरे शहर कोलकाता, चेन्नई, बंगलूर नये व्यवसायिक केन्द्र बनकर उभरे है। देश की राजधानी दिल्ली ने तो इन सभी को पीछे छोड़ दिया जहाँ 80 प्रतिशत लगभग आर्ट गैलरियाँ तथा 100 से अधिक आर्ट डीलर सक्रिय है। इण्डिया का 6 हजार करोड रूपये का सालाना कारोबार है। कला को बाजार तक लाने में शामिल है कुछ कला समीक्षक कला दीर्घायें और कुछ चित्रकारों की सक्रिय भूमिका रही है। कलाकार की कर्मठता कभी व्यर्थ नहीं जाती, उसे देर से ही सही पहचान तो मिलनी ही है। हमारे यहाँ के वरिष्ठ कलाकारों को ही देखे हुसैन, रजा, आरा, तैयब मेहता, राजकुमार, गायतोण्डे न लम्बा संघर्ष किया और तब जाकर उन्हें पहचान मिली और मूल्य भी।

वेद प्रकाश भारद्वाज के अनुसार–''यह उत्तर आधुनिक समय है जिसने समस्त कलाओं, चाहे वह साहित्य हो या चित्रकला या संगीत, नृत्य सबको बिकाऊ माल में बदल दिया हैं जो बिक सकता है या जिसके खरीदार पैदा किये जा सकते है। वही इस समय में सार्थक है बाकी सब निरर्थक। वे बाजार की मलाई खो देने के पक्ष में नहीं है। वे अपना हिस्सा चाहते हैं। पिछले कुछ सालों में बाजार केन्द्रित होकर कला जगत वहाँ पहुँच गया है। जहाँ तीस–चालीस से लेकर साठ साल तक साधना कर चुके कलाकार के समकक्ष एक तीस साल का युवा कलाकार खड़ा हुआ है। इस आधार पर कि

उसकी कीमत बाजार में वही है जो तीस साल से कला साधना कर रहे कलाकर की। इस बाजार में महत्व साधना या काम की गुणवत्ता का नहीं, परन्तु उस कीमत की है जो उसे मिल रही है।''[5]

इसमें कोई दो राय नहीं है कि यदि कलाकार का काम चल निकला तो उसकी कलाकृतियों की मुँह मांगी राशि मिलती है। जो न सिर्फ कलाकारों को ख्याति दिलाती है वरन उन्हें आर्थिक तौर से भी सुदृढ़ करती है। उदाहरण के तौर पर ''2008 में आसियान की आर्ट बुक और सिनेमा (ABC) नीलामी श्रृंखला में ख्याति पाप्त चित्रकार रामकुमार की कलाकृति 'सिस्टर्स' 3.48 करोड़ में बिकी। सैयद हैदर रजा की बिना शीषक वाली पेंटिंग 3. 12 करोड़ में बिकी। नीलामी में चौथे संस्करण में कुल 24. 10 करोड़ की राशि नीलामी के जरिये प्राप्त हुई। नीलामी में रखी गई 199 कलाकृतियों में से 156 बिक गई जो 78. 1 बिक्री है।''[6]

''करीब पांच दशक पहले 1000 में खरीदी गई 4.3×12 फुट की कैनवास पेटिंग ग्रीक लैडस्केप 2016 को 19.19 करोड़ में बिकी। अकबर पदमसी के यह पेटिंग 1960 में आर्टिस्ट कृष्ण खन्ना ने अपने निजी कलेक्शन के लिये खरीदा था।''[7]

निश्कर्श

हालिस्टिक एजूकेशनल एण्ड आर्ट के अध्यक्ष नेवी तुली का मानना है कि कला व्यवसाय को अगर सरकारी मदद मिले तो इसका स्वरूप और निखरकर आ सकता है। जतिनदास कला के फैलते बाजार से काफी उत्साहित है। कला जगत में इतना सब कुछ बदलाव देखते हुए हम यह कहने में सक्षम है कि आज भारतीय कला बाजार अपार संभावनाओं से भरा हुआ है। जब कला का उद्देश्य आर्थिक ही रह जाता है तो यह कला विकास के लिये हानिकारक है। यह सही है कि आज बाजारवाद और उपभोक्ता संस्कृति के कारण देखने का नजरिया बदला है लेकिन उसका प्रतिरोध माँग और पूर्ति के सिद्धान्त से ऊपर उठकर कलाकार को शुद्ध सृजन द्वारा ही करना होगा।

यदि कलाकार का कार्य उत्कृष्ट है तो वे चाहे देश के किसी भो कोने में हो उन तक कला दीर्घा व संग्रहकर्ता पहुँच ही जायेगे। कला रचना के समय अगर कलाकृति की राशि की कल्पना कलाकार के मस्तिष्क में आ जाती है। तो वह उसकी कल्पनाशक्ति तथा कार्यक्षमता को प्रभावित करती है। अगर समाज कलादीघार्ये तथा संग्रहकर्ता तथा कलाकार सभी मिलकर इस बात पर विचार करके विवेकपूर्ण तरीके से कार्य करे तो निश्चय ही कला और संस्कृति के माध्यम से कलाकार की आर्थिक जीवन शक्ति को बढ़ावा मिलेगा। कला बाजार का क्षेत्र अपार साहित्यिक विविधताओं से परिपूर्ण है वह कलाकारों के लिये सफलता के नये मार्ग खोलता है।

कला की आवश्यकता तो समाज का निर्माण व कलाकार का आवश्यकता संतोष के साथ–साथ व्यवसायोकरण भी है। कला जगत मे इतना सब कुछ बदलाव देखते हुए हम निश्चित रूप से यह कह सकने में सक्षम है कि आज भारतीय कला बाजार अपार सम्भावनाओं से भरा हुआ है। नवीनतम तकनीकी प्रयोगों के इस समय में विज्ञान और कला एकाकार हो गये है। कलाकृतियों का बाजार लगता है और नीलामी होती है जितना बड़ा कलाकार उतनी ही महंगी कलाकृति। कला बाजार को और अधिक समृद्ध बनाने के लिये बस जरूरत है। काननों में संशोधन करने की धोखाधड़ी रोकने, जागरूकता फैलाने की इस संदर्भ में नेशनल गैलरी ऑफ मार्डन आर्ट की पूर्व निर्देशिका 'अंजली सेन' ने तो ग्राहकों को ऋण देने तक की बात कही है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Literature .augp.org.>abhardjyoti>july.

भारतीय ललित कला जीविकोपार्जन के संदर्भ में'', डॉ0 आनन्द कुमार शर्मा

कला का बाजारीकरनण–रचनात्मक चुनौतियों : एक विश्लेषण, केनवास पटना अंक–1, वर्ष 2011, पृ0 48

समकालीन भारतीय कला, कलाकार और बाजार –डॉ0 रीना सिंह शाह

ललित कला अकादमी का प्रकाशन, समकालीन कला, अंक 27, जुलाई 2005 पृष्ठ 48

दैनिक भास्कर इंदौर, 08.07.2008, पृष्ठ 18

m.jagran.com, 10 Sep 2017